International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अनामिका के काव्य में मानवीय संवेदना

शोधार्थी; रेखा रानी
विषय–हिन्दी; रजि॰सं॰–17219011
जे॰ जे॰ टी॰ यू॰ चुड़ेला, झूंझूनु (राजस्थान)

संवेदना शब्द स्वयं में असीमित अर्थों का द्योतक है।संदर्भगत निसृत इसके भिन्न अर्थ समस्त मानवीय भावों को समेटे हुए हद से लगातार बेहद होता जा रहा है। वर्तमान दौर मानसिक उद्वेलन का दौर है। मनुष्य प्रतिपल स्वयं से लड़ता प्रतीत होता है।बाहरी तत्त्व हमारे जीवन को जितना प्रभावित करते हैं ,उनसे कही ज्यादा आंतरिक मानसिक असंतुलन जीवन एवं समाज से हमारा तादात्मय बिगाड़ रहा है।पल–प्रतिपल परिवर्तित होती हमारी संवेदनाएँ ही हमारे जीवन को परिचालित करती हैं। हम कब, किस संदर्भ में कैसा व्यवहार करेंगें,यह हमें स्वयं भी ज्ञात नहीं है–यह एक विचारणीय समस्या है जिससे जाने–अनजाने हम सब प्रभावित होते रहते हैं।सामान्य मनुष्य इन परिवर्तनों,असंतुलनों तथा प्रभावों को अभिव्यक्त न कर सकने के कारण सदैव आन्तरिक संघर्षों का सामना करता है लेकिन साहित्यकार इस आन्तरिक द्वंद्व से अभिव्यक्ति द्वारा छुटकारा पा लेता है।कोई भी परिवर्तन उसे लम्बे समय तक प्रभावित नहीं कर सकता। भावनात्मक उद्वेलन के प्रत्येक पहलु का सूक्ष्म अवलोकन करके रचना निर्माण द्वारा उसे शब्दबद्ध कर देता है और यदि रचनाकार श्रेष्ठ भावभूमि पर पहुँचने में सफल होता है तो उसके भाव साधारणीकरण को प्राप्त कर लेते हैं।यही एक श्रेष्ठ साहित्यकार का कर्त्तव्य होता है। साहित्य एवं संवेदना के संदर्भ में राम मनोहर त्रिपाठी जी कहते हैं–

"साहित्यकार सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक जागरूक और संवेदनशील होता है।वह प्रत्येक यथार्थ का ग्रहण न केवल इंद्रियों के माध्यम से करता है बल्कि मन ,बुद्धि,और सम्पूर्ण भावनात्मक सत्ता के साथ भी करता है।दृष्टा के सामने जो जीवन के यथार्थ प्रस्तुत होता है, उसे वह अपनी अन्तश्चेतना के भीतर जीवन दृष्टि अनुभव ,सौंदर्यबोध एवं नैतिकबोध आादि के प्रकाश में विश्लेषित,विवेचित करता है।इस स्तर पर संवेदना रचना में प्रवृत्त होती है।"(1)

किसी भी रचना प्रक्रिया में सर्वप्रथम साहित्यिक मन ही सक्रिय होता है और वह साहित्यिक मन यदि कवि हो तो कहना ही क्या! कवि मन की कोई सीमा नहीं होती इसलिए को शुद्ध संवेदनाओं की पराकाष्ठा कहा गया है। एकांत की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या में संवेदनाओं की निश्छल नदी प्रवाहमान होती है।रचना निमार्ण में सृष्टा आत्मरस उड़ेल कर उसे अक्षय रस का पात्र बना देता है। सृष्टा एवं दृष्टा के संदर्भ में नंदकिशोर नवल ने बहुत स्पष्ट शब्दों में मुक्तिबोध के संदर्भ में कहा है–

"मुक्तिबोध ने भोक्ता और सृष्टा की जगह भोक्ता और दर्शक अथवा दृष्टा शब्दों का प्रयोग किया है जो अधिक सार्थक इस कारण है कि भोक्ता कवि से संबंधित है और दृष्टा समाज से। भोक्ता का संबंध संवेदना से है तथा दृष्टा का ज्ञान से। एक वैयक्तिक है दूसरा निर्वैयक्तिक।"(2)

इस प्रकार कवि संवेदना के स्तर पर प्रथम सृष्टा एवं भोक्ता तथा पाठक दृष्टा की भान्ति ज्ञान के स्तर पर उन संवेदनाओं को गृहण कर अपनी दृष्टि विस्तार करता है। कवि की ये संपूर्ण संवेदनाएँ उस युग विशेष का प्रतिबिम्ब होती हैं।समस्त युग के क्रियाकलापों का भाव संचयन करके वह काव्य निमार्ण करता है।एक सच्चे एवं बड़े कवि कर्त्तव्य यह है कि उसकी रचनाएँ दृष्टा को एक साथ ही जग दर्शन करवा सके।राम स्वरूप चतुर्वेदी जी कहते हैं–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"बड़े कवि की एक पहचान यह हो सकती है कि कविता उसने अपने युग की संवेदना से बनाई है या नहीं। हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में संवेदना के विविध रूप देखने को मिलते हैं।"(3)

हिन्दी कविता के सन्दर्भ में एक ऐसी ही एक महान विभूति अनामिका जी हैं अत्यन्त सरलता एवं सादगी से भरा उनका मन संवेदना एंव आत्मीयता का भण्डार है । उनके काव्य का मानवीय संवेदनाओं के परिप्रेक्ष्य में अवलोकन करना समस्त जीवन की महीन व्याख्या को आत्मसात् करना है। मानवता अनामिका के व्यक्तित्व की विलक्षणता है। कहने भर के लिए नहीं बल्कि जों भी अनामिका जी से मिलता है ,एक पल के लिए स्वयं को विस्मृत कर उनकी वाणी एवं व्यवहार के प्रभाव में बह जाता है। ऐसी अदभूत कवयित्री के काव्य का अध्ययन हमें संवेदनाओं के विविध आयमों से अवगत करवाता है। मानवीय संवेदनाओं को विशेष से सामान्य की ओर ले जाती अनामिका लोक सम्पृक्त कवयित्री हैं। भारतीय ग्रामीण एंव शहरी परिवेश की नब्ज को टटोलने में सक्षम कवियित्री सम्पूर्ण धरती के प्राणियों के अहसासों रूपी समुद्र ,उफान से टकराकर संवेदनाओं के मोती खोजने में सफल होती है। नरेन्द्र पुण्डरिक के शब्दों में –

" अपनी धरती एवं लोक के गहरों अहसासों में डूबी, उनमें ज्ञान के आलोकन से टकरा–टकराकर संवेदनाओं के मोतियों को कविता में बुनकर पाठकों के बीच ले जाती हैं। लोक रंग और भाषा उनके यहाँ खास बनकर नहीं बल्कि जीवन की अनुभूतियों से धुलकर आते हैं। स्त्री संवेदना के लिए लड़ने का इनका अपना ढंग है। ज्ञान एंव संवेदना के साथ एक अलग रिश्ता बनाती हुई चलती है।'' (4)

अनामिका का काव्य मानवीय संवेदना आशा– निराशा, खीझ, संत्रास अकेलापन मानासिक द्वंद्व आदि मानसिक संघर्ष के साथ–साथ मानवता, समरसता, भ्रातृत्व, सहजता, निजत्व, अस्मिता, आत्मविश्वास नवचेतना जैसे उर्ध्वगामी संवेदनाओं से संचित है। यथार्थ से जुड़कर मानव जीवन का निकटता सिंहवलोकन किया है। वृद्ध व्यक्ति की मनोदशा का वर्णन करते हुए कहती हैं– वृद्वावस्था में मानसिक संतुलन थोड़ा गड़बड़ा जाता है। मन थोड़ा– सा भी अनमना होते ही, एक जगह नहीं रहता है। बंजारे की भांति भटकता रहता है। यथा–

" ऐसा है कि उसके बाद ,कही भी मेरा जी थोड़े दिन में
उखाड़ लेता है डेरा बुड्ढ़े का मन, सचमुच बनजारा होता है
टूटे थर्मामीटर का पारा होता है।"(5)

अनामिका का काव्य स्त्री संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का तो पिटारा है। मदन कश्यप जी कहा हैं–

"अपनी कोमल भावनाओं तथा विवेकशीलता और संवेदनशीलता के कलात्मक संयोजन के कारण अनामिका की कविताएँ अलग से पहचानी जाती हैं। स्त्री विमर्श के इस दौर में स्त्रियों के संघर्ष और शक्ति का चित्रण तो अपनी–अपनी तरह से हो रहा है, लेकिन महोदवी वर्मा ने जिस वेदना और करूणा को अपनी कविता के केन्द्र में रखा था, (वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास) उसका विस्तार केवल अनमिका ही कर सकती हैं–

'' हिन्दी में ऐसे थोड़े से ही उल्लेखनीय रचनाकर हैं जो अपने आसपास के संघर्ष और वेदना के केवल देख–परख कर नहीं बल्कि अपने अंतस् में उसे उतारने के बाद ही कुछ रचते हैं। उनमें एक अनामिका भी हैं।''(6)

एक विशेष प्रकार के बहनापे के रिश्ते में बंधा अनामिका का मन स्त्रियों की मानसिक शारीरिक सभी तरह भी पीड़ाओं एवं संवेदनाओं के परिचित है। प्रेम से लेकर परित्यकता तक की असहनीय पीड़ा की प्रक्रिया का जितना सूक्ष्म वर्णन इनका कविताओं में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। आन्तरिक मानसिक पीड़ाएँ एवं टूटन स्त्री जीवन की त्रासदी है। निरन्तर चलती यह प्रक्रिया भीतर–ही–भीतर पिराती रहती है। यथा–

"नहीं,बढ़ रहा है भीतर–भीतर ,बढ़ रहा है जैसे बढ़ती है नदी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

या कि वृक्ष नहीं,घर नहीं, दीवार नहीं,छत भी नहीं
लेकिन कुछ न कुछ, ढह रहा है मेरे भीतर
जैसे नई ईंट की धमक से मारे खुशी के–
महक जाता है खण्डहर।"(7)

वे कहती हैं कि नदी की भांति लगातार भीतर कुछ बढ़ रहा है। पता नहीं वह क्या है, पर बढ़ रहा है, ढह रहा और सब खण्डहर हो रहा है। यह पल–पल परिवर्तित होता मानवीय मनोभाव कवयित्री की मानवीय संवेदनाओं की पराकाष्ठा है। संवेगों का उतार–चढ़ाव हमारी मानसिक स्थिति को दर्शाता है। शिथिल पड़ी स्त्री के कुछ देर पहले भी मानसिक स्थिति का अवलोकन करती हुई वे कहती हैं कि –

कुछ देर पहले वे फूर्ती में थी– "कुछ देर पहले वे फूर्ती में भी।
कुछ भी कर सकती थीं वे
छोटे बच्चे जूतें–मोजे पहनकर
दिन से ही गेट पर टहलने लगते हैं जैसे
रात दस बजे की गाड़ी के लिए–
वे भी आतुर थीं जरा देर पहले तक
कुछ कर गुजरने की खातिर!"(8)

नरेन्द्र पुण्डरिक कहते हैं –

'' औरतों के जीवन सन्दर्भों का चालीसा हैं अनामिका की कविताएँ जिनमें शायद ही स्त्री जीवन का कोई कोना छूटा हो। स्त्री संवेदना में गहरी उतरी ये कविताएँ पाठक के भीतर टंककर रह जाती है।''(9)

ममता का सागर विपरीत परिस्थितियों में भी उसमें हिलो मारता रहता है। समाज तथा सम्बन्धों से छली जाने पर मरने के उतारू मानसिक संवेदना से ग्रस्त स्त्री जब अपनी संतान के बारे में सोचती है तो वह संसार भर की निर्ममता को भूल, अपनी संतान के लिए जीती है। यथा–

'' थक्कर सोये है दोनों बच्चे,
छोटे को बाल तक काढ़ना नहीं आता
और बड़ा तो और है–
मोंजे का उल्टा सीधा भी नहीं जानता
उठकर करेगा उठाने की कोशिश–
आज दिन चढ़े तक सोई कैसे अम्माा री ?''(10)

अनामिका जी की संवेदना अल्पासंख्यक वर्ग के प्रति भी यत्र–तत्र उमड़कर आती है। समाज में फैली असहिष्णुता, साम्प्रदायिकता, दंगे, बम विस्फोट और आंतकवादी गतिविधियों के कारण भय और आशंका का वातावरण बना दिया है कि अल्पसंख्यक वर्ग भय से ग्रस्त है। तभी छोटे बच्चे के मन में यह सवाल आता है कि –

"प्रेमचन्द की कहानी में
वो जो हामिद था– दादी के चिमटे, वाला
यह जो इतनी मारामारी, कहाँ गई होगी दादी ?
क्या हामिद बड़ा होगा? क्या वह दादी को बचा लेगा? ''(11)

मानव मन सदा अतीत वर्तमान तथा भविष्य के प्रति आशंकित तथा भयभीत रहता है। यह स्वाभाविक प्रक्रिया है। अनामिका जी कहती हैं कि अतीत को याद करना कोई बुरी बात नहीं है पर कुछ अनचाहे घाव हरे हो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जाते है जो मानसिक पीड़ा का कारण बनते हैं और कुछ चीजें इतनी अस्पष्ट होती है कि उनकी वास्तविकता का सही अदांजा ही नहीं लगाया जा सकता–

'' अच्छा होता है कुरेदना–
आदमी हो मिट्टी या घटना–
क्या बुरा है सारे घाव हरे करना !.....
हरियाली की तह में
मिट्टी मिलती है और प्रागैतिहासिक
जिसमें की शेर और बकरी की शक्ल
एक दीखती हैं।''12

बाहरी दुनिया में क्या हो रहा है, क्या नहीं हो रहा? कई बार अवचेतनावस्था में भान नहीं रहता क्योंकि अन्दर एवं बाहर इतनी उथल–पुथल मची है कि मनुष्य ठीक से आभास ही नहीं कर पाता कि वास्तव में क्या हो रहा है ?यह संवदेनाओं की अत्यधिकता एवं मिश्रण के कारण ही असन्तुलित मन की व्यथा है–

"क्या छोड़ें और क्या बताए ,यह सोचते, अन्त में कहते हैं–
माफ करें दरअसल मैं जानता ही नहीं–
आजकल क्या हो रहा है ,आस–पास मेरे या मेरे भीतर ही।
कुछ होकर नहीं होता है,कुछ नहीं होकर भी अगरधत्त भाव से
होता है होने की पूरी इयत्ता से।"13

अनामिका के काव्य में संवेदना की इतनी गहराई है कि स्वयं कवयित्री सुधबुध खो बैठती है कि आखिर वह कौन–सी मानसिक अवस्था है जो भीतर हलचल मचाए हुए है। अजनबीपन, अकेलापन ,जिद् या इंतजार आखिर वह है क्या जो जिसके खिलाफ वह स्वयं से लड़ रही है। मगर किसके खिलाफ ?यह प्रश्न करती कवयित्री कहती हैं–

"वह बोली–हम जहाँ रहते हैं–
वहाँ से कोई कहीं नहीं जाता!
एक शाश्वत रहनुमाई,न कहीं फोन करती है
न लिखती है चिट्ठी,रहती है, रहती है, रहती है
जिद्–सी ठनी केवल रहती है,लगातार लड़ती हुई
खुद अपने खिलाफ, करती हुई इंतजार
मगर किसका?"14

उपेक्षा का भाव मनुष्य को अन्दर ही अन्दर नष्ट कर देता है। ऐसे में कविता स्वयं के अस्तित्व को खोजने की जंग में है। बिना स्याही की कलम बन जाता है जो लगातार लिख तो रही है लेकिन कुछ अस्तित्वहीन है। ऐसी मानसिक दशा में मुक्त योगी स्वयं को खत्म करने के कोशिश में दूसरों से गुहार लगाता है। पीड़ा की अति इससे ज्यादा और क्या हो सकती है–

'' बिना स्याही की कलम लिखती रही
लिखती रही जिस पेज पर–
वो हूँ बेचैन। मुझमें खत्म होना है
मुझे तुम खत्म कर ही दो–
किसी अरेबियन नाइट,
किसी किस्साए तोता मैना की तरह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मैं खत्म जो होती नहीं।
तो मोड़ दो मेरा ये रूख तुम। ''(15)

भय एवं संदेह की मानसिक अवस्था व्यक्ति को कमजोर बनाती है। मानव संवेदना का यह भाव सदैव मन को आंशकित किये रहता है। अनामिका के काव्य में मानव सुलभ सभी संवेदनाओं की पड़ताल हुई है। उछल –कूद से लेकर आत्म शांति के लिए अनन्त गहन चिंतन में जाता मन एक पृथक संसार की संरचना करता प्रतीत होता है। वे कहती हैं कि चाहे हम सब एक साथ सोये पर जागरण सबका अकेले ही होता है। सबकी अपनी–अपनी समस्याएँ हैं, मकान है जिसमें सदा भय एवं संदेह का कबूतर चरम भयके साथ सबके अन्तर्मन में सदा विद्यमान रहता है–

"कोई सोचें साथ भले ,पर जगते सभी अकेले हैं
सबकी अपनी ही थकान है,सबके अलग झमेले हैं
या ऐसा ही कुछ कहते वो
घर की सीढ़ी भी तो एक पहाड़ी थी
सीढ़ी–घर में ये बहुत–से कबुतर।"16

बचपन के दिये संस्कारों का मूल्याकंन जब किया जाता है तो पता चलता है कि हमारा व्यक्तित्व जिन उपदेश आदेशों से निर्मित हुआ है ,उसी नेकनीयती का यह सब किया धरा है जो हमारे सामने प्रत्यक्ष है–

"सोचती हूँ यह अक्सर –
ऐसे ही मनोयोग से सिलकर बचपन में
कितनी तो झालरें पिन्हाई गई थी मुझे भी
उपदेश–आदेश–सन्देश
एक देश सब में था नेकनीयती का
यह बात वैसे ,अलग है कि
नेकनीयती से ही पटा पड़ा होता है
पर नर्क का रास्ता!" (17)

मानव सुलभ इच्छाएँ, कामनाएँ सदैव उसकी अर्ध चेतनावस्था में सदैव गतिशील रहती हैं। जीवन पर्यन्त इच्छाओं के चक्रव्यूह में फँसकर मनुष्य जान चुका है कि अन्ततः हाथ कुछ नहीं आता है। जीवन वसंत के जीने के बाद पतझड़ में सूखे पत्ते– सा पतझड़ ही हमारी नियति ही। इसे समय रहते स्वीकारने से मानव मन आहत होने से बच जाता है। चाहे वातावरण अनूकूल भी हो लेकिन अब उसका प्रभाव ह्रदय पर नहीं पड़ता। सब कुछ खाली खाली–सा हो गया है अब वहाँ पहले–सी हुक नहीं उठती–

कामदेव अब भी चलाते हैं तीर, पेज थ्री वाली तस्वीर से
पर जाने क्या बात है,कि हुक उठती नहीं
सूनी अमराई में ,खाली ही डोल रहा है
हर हिंडोला ! ,इस भरी फगुनाहट में भी
क्यों हो गये हैं हम ,उल्टी दिशाओं में उधियाते
दो सूखे पत्ते ।"(18)

इस प्रकार मानवीय संवेदनाओं के परिप्रेक्ष्य में जब अनामिका के काव्य का अवलोकन किया जाता है तो वे एक सच्चे रचनाकार की कसौठी पर खरी उतरती है। लेखन की सार्थकता सिद्ध करती कवयित्री सम्पूर्ण मानवीय संवेगों, अनुभूतियों को समेटकर पाठक की झोली में उपहार स्वरूप उड़ेल देती है। अनुग्रहित पाठक साहित्यिक मन को पढ़ सकने का सामर्थ्य जुटाकर उत्साहित हो उठता है। यहाँ पर कवि एवं पाठक दोनों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उच्च भाव भूमि पर आसीन रचना संसार की मानवीय संवेदनाओं की जगहित में व्याख्या करते प्रतीत होते हैं लेकिन श्रेष्ठ रचना तभी फलीभूत होता है जब उसे सुधी पाठक मिलता है। तभी रचना अपना प्रभाव डालती है। नंद किशोर नवल जी कवि कर्म अर्थात् कविता की सार्थकता पर विचार करते हुए कहते हैं कि –

"कविता भी सार्थकता अंततः उसके कविता होने में हैं और वह जब पाठकों पर अपना सौन्दर्यात्यक प्रभाव डालने में सफल हो जाती है तो उसे उसके विचार दर्शन या विशिष्ट प्रकार के भाव–बोध के आधार पर रदद् नहीं किया जा सकता है।''19

अन्ततः अनामिका के काव्य में मानवीय संवेदनाओं की व्याख्या विभिन्न दृष्टिकोणों से तथा कितने भी विस्तृत फलक पर की जा सकती है। विभिन्न मनों भावों की इतनी तन्मयता से शब्दरूपी मोतियों द्वारा कविता रूपी जो मालाएँ गुँथी गयी हैं उनसे निश्चय ही हिन्दी काव्य संसार वृद्धि प्राप्त करेगा।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1–राम मनोहर त्रिपाठी ,हिन्दी कविता :संवेदना एवं दृष्टि,पृष्ठ–37
2–नंद किशोर नवल,मुक्तिबोधःज्ञान और संवेदना,राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली,2019,पृष्ठ–69
3– रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016 पृष्ठ– 38
4 नरेन्द्र पुण्डरिक, कविता के हर कोने में झाँकते स्त्रीं, अनामिकाः एक मूल्यांकन, सामाजिक बुक्स, 2013 पृष्ठ–17
5 अनामिका, समय के शहर में,पराग प्रकाशन,नयी दिल्ली,1990,पृष्ठ–32
6–मदन कश्यप, ठूंठ पर पत्ती के फूट पड़ने की जिद्दी धमक, अनामिका : एक मूल्यांकन, , सामाजिक बुक्स पृष्ठ– 49
7 अनामिका, बीजाक्षर, भूमिका प्रकाशन, नयी दिल्ली,1993,पृष्ठ.29
8 अनामिका, अनुष्टुप, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली,1998,पृष्ठ–23
9 नरेन्द्र पुण्डरिक कविता के हर कोने से आँकती स्त्री, सं0 अभिषेक ,सामाजिक बुक्स, नयी दिल्ली,2019 पृष्ठ–47
10–अनामिका ,खुरदरी हथेलियाँ राधाकृष्ण प्रकाशन,नयी दिल्ली ,2005,पृष्ठ–33
11–अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन,नयी दिल्ली ,2005 पृष्ठ–127
12– अनामिका, अनुष्टुप ,किताबधर प्रकाशन,नयी दिल्ली,1998 ,पृष्ठ. 90
13– अनामिका,, अनुष्टुप ,किताबधर प्रकाशन,नयी दिल्ली,1998,पृष्ठ.90
14–अनामिका, अनुष्ठुप, ,किताबधर प्रकाशन,नयी दिल्ली,1998,पृष्ठ–125
15–दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ,नयी दिल्ली, पृष्ठ–88
16–दूब–धान भारतीय ज्ञानपीठ,नयी दिल्ली, पृष्ठ–, 107
17–दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ,नयी दिल्ली, पृष्ठ–126
18–दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ,नयी दिल्ली, पृष्ठ–129
19–नंद किशोर नवल, कविता के आर–पार ,राजकमल प्रकारशन, नयी दिल्ली, 2018, पृष्ठ–110